मधुबन ओम् शान्ति अंक 319 फरवरी 2019

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(11-01-19)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा परमात्म प्यार के झूले में झूलने वाले, ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रख, उनके समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के तीव्र पुरुषार्थी, सदा उड़ती कला के पंखों से उड़ने वाली सर्व निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ने जनवरी के वरदानी मास में बहुत अच्छी तपस्या की है। पूरा ही मास हर एक के दिल में साकार ब्रह्मा बाप की विशेष स्मृतियां समाई रहती हैं। साकार सो अव्यक्त सो निराकार तीनों रूपों से मीठे बापदादा ने जो हम बच्चों की पालना की है, मीठी शिक्षाओं से सजाया है, हर एक की दिल से मीठा बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा के गीत निकलते और सभी उसी स्नेह में समा जाते हैं।

संगमयुग पर हर बच्चे को बाबा से सम्मुख मिलन की अच्छी भासना आती है, भले कोई साकार में नहीं भी मिले लेकिन अव्यक्त रूप से हमारी मीठी गुल्जार दादी द्वारा जो पिछले 50 वर्षों से बापदादा ने सभी बच्चों का श्रृंगार किया है, वतन में रहते भी अव्यक्त रूप से कितनी शक्तिशाली पालना की है। मीठे बाबा की शक्तिशाली सकाश, उनका वरदानी हस्त हम सब अनुभव करते सदा निर्विघ्न स्थिति में रह आगे बढ़ते रहते हैं। एक एक बच्चे को बाबा अपने प्रेम की डोर में खींच रहा है। हमने ब्रह्माबाबा को शुरू से देखा, लौकिक में भी बाबा की दृष्टि से बहुत स्नेह और शक्ति का अनुभव होता था, उसमें बहुत आनन्द आता था। भगवान को कहते हैं सत् चित्त आनंद स्वरूप, वह सच्चाई सिर्फ हमारे चिंतन में नहीं है पर चित्त में है फिर शान्ति में बैठने से एनर्जी पैदा होती है और जब एनर्जी बढ़ती है तो वायुमण्डल बहुत अच्छा रूहानियत वाला हो जाता है।

बाबा की दिल बच्चों को अपने समान बनाने में बहुत बड़ी है। बाबा की यह इच्छा कहो, आशा कहो वह हम बच्चों को पूरी करनी है। देखो, इस वायुमण्डल में बाबा की दया और दुआ काम कर रही है ना। बाबा की दया से ही हम सबमें शक्ति पैदा होती है। उसमें भी सच्चाई की शक्ति है तो कोई मेहनत नहीं लगती। बाबा ने मेहनत से छुड़ा दिया, मोहब्बत से सदा खुश-आबाद रहते हैं। जो बात बीती वह अच्छी, अभी जो होगा वह अच्छे से अच्छा होगा। हर एक अच्छा-अच्छा सोचने की अच्छी नेचर बना लो। संगम का यह जो थोड़ा-सा समय है, इस समय जो बाबा की कशिश होती है, यह बहुत वैल्युबुल है। कोई भी बात न चलायमान करती है, न डोलायमान करती है, अचल अडोल रहते हैं तो कितने भाग्यशाली हैं! बाबा ने कितनी एकाग्रता की शक्ति दी है। कुछ भी हो जाए लेकिन हर पल बाबा दिल में याद रहता है तो ऐसे लगता है जैसे बाबा हमें अपनी पलकों में बिठाकर सेवा करा रहा है। अपने स्वमान में रहते हैं, सबको सम्मान देते हैं। अमृतवेले से लेकर रात्रि तक दिनचर्या में एक्यूरेट रहते हैं, हर ईश्वरीय नियम और मर्यादा का पालन करते हैं तो टाइम वेस्ट नहीं होता है।

बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें संगम का हर श्वांस, संकल्प, समय और सर्व शक्तियां बेहद सेवाओं में सफल हो रही हैं ना। मैं तो हर पल मीठे बाबा के गुण गाती हूँ - कैसे बाबा हिम्मत के साथ-साथ शक्ति देकर बेहद सेवायें कराता रहता है।

सबकी दुआओं का बहुत अच्छा अनुभव होता है। अच्छा!

सर्व को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"अब सब किनारे छोड़ सम्पन्न और सम्पूर्ण बनो"

1) सम्पन्न बनना अर्थात् अपनी अन्तिम फरिश्ते जीवन की मंज़िल पर पहुंचना। जितना-जितना इस अन्तिम मंज़िल के नज़दीक आते जायेंगे उतना सब तरफ से न्यारे और बाप के प्यारे बनते जायेंगे। जैसे कोई चीज़ जब बनकर तैयार हो जाती है तो किनारा छोड़ देती है, ऐसे जितना सम्पन्न स्टेज के समीप आते जायेंगे उतना सर्व से किनारा होता जायेगा। तो सब बन्धनों से, सब तरफ के लगावों से वृत्ति द्वारा किनारा होना अर्थात् सम्पन्न वा सम्पूर्ण बनना।

2) सम्पूर्णता को समीप लाने के लिए सिर्फ दो शब्द याद रखो - मैं बिन्दु हूँ और बाप भी बिन्दु है, लेकिन बिन्दु के साथ-साथ सिन्धु है। तो एक बिन्दु की याद और एकरस अवस्था, एक की ही मत और एक के ही कर्त्तव्य में मददगार बनो। बाकी विस्तार में जाने की दरकार नहीं। विस्तार में जाना है तो सिर्फ सर्विस प्रति। अगर सर्विस नहीं तो बिन्दु, उसके आगे अपनी बुद्धि को चलाने की आवश्यकता नहीं है। यही सहज विधि है - सम्पूर्णता को प्राप्त करने की।

3) सम्पन्नता सदा सन्तुष्टता का अनुभव कराती है। सन्तुष्ट आत्मायें सम्पन्न होने के कारण किसी से भी तंग नहीं होगी। सम्बन्ध में भी कोई खिटखिट नहीं होगी। अगर होगी भी तो उसका असर नहीं आयेगा। किसी भी प्रकार की उलझन या विघ्न एक खेल अनुभव होगा। समस्या भी मनोरंजन का साधन बन जायेगी क्योंकि नॉलेजफुल होकर देखेंगे।

4) जैसे बाप सम्पन्न है इसलिए बाप की महिमा में सागर शब्द कहते हैं, यह सम्पन्नता को सिद्ध करता है। तो बाप समान मास्टर सागर बनना ही सम्पन्न बनना है। नदी तो फिर भी सूख जाती है। सम्पन्न आत्मायें सदा खुशी में नाचती रहेंगी। खुशी के सिवाए और कुछ अन्दर आ नहीं सकता।

5) अभी बाप समान स्वयं को और सेवा को सम्पन्न करो। बाप समान अव्यक्त वतनवासी बन जाओ। बापदादा अभी भी आव्हान करते हैं। अब रहे हुए थोड़े समय में सर्व बातों में स्वयं को सम्पन्न बनाओ। अगर एक भी सम्बन्ध वा गुण की कमी है तो सम्पूर्ण स्टेज वा सम्पूर्ण मूर्त नहीं कहला सकते। बाप का गुण वा अपना आदि स्वरूप का गुण अनुभव न हो तो सम्पन्न मूर्ति कैसे कहेंगे इसलिए सबमें सम्पूर्ण बनना है।

6) जैसे बापदादा व्यक्त में आते भी अव्यक्त रूप के, अव्यक्त देश के अव्यक्ति प्रवाह में रहते हैं। बच्चों को यह अनुभव कराने के लिए साकार वतन में आते हैं। ऐसे आप सभी भी अपने अव्यक्त स्थिति का अनुभव औरों को कराओ। जब अव्यक्त स्थिति की स्टेज सम्पूर्ण होगी तब ही अपने राज्य में साथ चलना होगा। तो एक आँख में अव्यक्त सम्पूर्ण स्थिति, दूसरी आँख में राज्य पद हो।

7) बापदादा सभी बच्चों के सम्पूर्ण मुखड़े देखते हैं। सम्पूर्णता नम्बरवार होगी। माला के 108 मणके जो हैं, तो नम्बरवन मणका और एक सौ आठवाँ मणका दोनों को सम्पूर्ण अर्थात् विजयी रत्न कहेंगे। लेकिन अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त करेंगे। उनके लिए सारे ड्रामा के अन्दर वही सम्पूर्णता की फर्स्ट स्टेज है।

8) सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए सदा उपराम और दृष्टा बनो। अपनी देह से भी उपराम, अपनी बुद्धि से उपराम, मेरे संस्कार हैं, इस मेरेपन से भी उपराम। मैं यह समझती हूँ, इस मैं पन से भी उपराम। तो मैं शरीर हूँ, एक तो यह छोड़ना है, दूसरा मैं समझती हूँ, मैं ज्ञानी तू आत्मा हूँ, मैं बुद्धिमान हूँ, यह मैं पन मिटाना है। जहाँ मैं शब्द आता है वहाँ बापदादा याद आये। जहाँ मेरी समझ आती है वहाँ श्रीमत याद आये। ऐसे ही साक्षी दृष्टा भी बनना है तब ही सम्पूर्णता को प्राप्त कर सकेंगे।

9) आपकी लास्ट सम्पन्न स्टेज का गायन है–सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, सम्पूर्ण अहिंसक.... महिमा में भी सबके साथ सम्पन्न व सम्पूर्ण शब्द है। तो चेक करो यह सम्पन्न-पन का वर्सा बाप द्वारा प्राप्त कर लिया है? कहाँ तक सम्पन्न वा सम्पूर्ण बने हैं?

10) सम्पन्नता अचल स्थिति का अनुभव कराती है। जब सब बातों में सम्पन्न बनेंगे तब यह आंख व बुद्धि किसी तरफ नहीं डूबेगी। सदा रुहानियत में रहेंगे। अनेक व्यर्थ संकल्पों वा अनेक तरफ बुद्धि व दृष्टि जाने से परे, सर्व फिकरों से फारिग और अपने बाप द्वारा मिले हुए खजाने में सदा रमण करते रहेंगे। अन्य कोई संकल्प करने की फुर्सत नहीं होगी।

11) अपनी सब जिम्मेवारियों का बोझ बाप को देकर आप डबल लाइट स्थिति में फरिश्तों की दुनिया में रमण करते रहो। फरिश्तों की दुनिया में रहने से बहुत ही हल्कापन अनुभव होगा जैसे कि सूक्ष्मवतन को ही स्थूलवतन में बसा दिया है। जब स्थूल और सूक्ष्म में अन्तर नहीं रहेगा, यह व्यक्त देश जैसे अव्यक्त देश बन जायेगा फिर सम्पूर्णता के समीप आ जायेंगे।

12) सम्पूर्णता को समीप लाने के लिए संस्कारों को मिलाना होगा। संस्कार मिलाने के लिए कुछ भुलाना होगा, कुछ मिटाना

होगा और कुछ समाना होगा। इन्हीं तीन बातों से अन्तिम सिद्धि का स्वरूप सहज अनुभव होगा। इसके लिए एक दो की बातों को स्वीकार करो और सत्कार दो तब सम्पूर्णता और सफलता दोनों ही समीप आयेंगी।

13) सम्पन्न बनने वाली आत्माओं के सामने अब परीक्षायें व विघ्न भी अति के रूप में आयेंगे, इसलिये आश्चर्य नहीं खाना है कि पहले यह नहीं था, अब क्यों है? फाइनल पेपर में आश्चर्यजनक बातें क्वेश्चन के रूप में आयेंगी, ना चाहते हुए भी बुद्धि में क्वेश्चन उत्पन्न होंगे, यही एक सेकेण्ड का पेपर होगा। क्यों का संकल्प चन्द्रवंशी की क्यू में लगा देगा। जब यह क्यों शब्द निकल जायेगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रहेंगे। तो अभी क्यों की क्यू को खत्म कर सम्पन्न और सम्पूर्ण बन समय को समीप लाओ।

14) जैसे चन्द्रमा जब 16 कला सम्पूर्ण हो जाता है तो ना चाहते हुए भी हरेक को अपनी तरफ आकर्षित करता है ऐसे कोई भी वस्तु सम्पन्न होती है तो अपने आप आकर्षण करती है। तो जब सम्पूर्णता के समीप पहुंचेंगे तो विश्व की सर्व आत्माओं को स्वत: आकर्षित करेंगे क्योंकि सम्पूर्णता में प्रभाव की शक्ति होती है। तो प्रभावशाली बनने के लिए सम्पन्न बनना पड़े।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 24-12-14 *मधुबन*

"अपनी रक्षा करनी है तो किसी का कोई भी अवगुण चित्त पर न रखो"

(दादी जानकी)

सभी ऐसे 3 बारी ओम् शान्ति बोलो, जो सारी विश्व में आवाज फैल जाये बिना माइक के। वन्डरफुल। यह मेरा महान मन्त्र पहला ओम् शान्ति आत्मा को लाइट बना देता, जो मैं यहाँ आपके सामने हाज़िर हूँ। दूसरा किसकी माइट से? बाबा की माइट से। तीसरा ओम् शान्ति आपका प्यार, परिवार के प्यार की भी कमाल है। हमारे परिवार का इतना प्यार है, तो बाबा का भी कितना प्यार मिला है।

अभी मैं अपने परिवार को एक बात कहना चाहती हूँ कि कभी किसी के प्रति ज़रा भी ग्लानि की बात न सुनना, न सोचना यह अपने आपसे प्रॉमिस करो। मैं तो जरा सी भी नहीं सुनती, ना ही कभी कुछ सोचती हूँ, तभी जिंदा हूँ। नाटक माना ना अटक, बात जो हुई सो ड्रामा।

साइंस और साइलेंस का कितना बड़ा कनेक्शन है, यह मुझे देखने और अच्छी तरह से जानने को प्रैक्टिकल में मिला। साइंस विनाशकाल ले आ रही है और साइंस ही स्थापना के कार्य में भी मदद करती है। हम लोगों के सामने जो भी बातें आ रही हैं उनको पार करने में भी साइंस अच्छी मदद कर रही है। तो साइंस क्या है, यह भी हॉस्पिटल में अच्छी तरह से अनुभव करने को मिला। अभी भी डॉक्टरों ने जो डायरेक्शन दिया है मैं उसी अनुसार चलूँगी, परन्तु मैंने कहा मुझे सुबह को अमृतवेला वहाँ करना है। कल रात 2.15 बजे शान्तिवन पहुँचे फिर 4 बजे अमृतवेला किया। यह अमृतवेले का जो महत्व है, कभी भी नहीं छोड़ना। वहाँ कैसी कन्डीशन में थी, (डाक्टर्स ने आई.सी.यू में रखा था) पर हंसा की मुझे मदद यह है कैसे भी करके मुझे ठीक पौने चार बजे उठाकर, बिठायेगी..। तो मैं आप सबको अच्छी तरह दिल से कहती हूँ - एक तो बीती बात कोई की, कभी भी चिंतन नहीं करना। जो बीता वह ठीक है, ड्रामा में था.... आज मैंने 3 दिन की मुरलियां पढ़ी, क्योंकि 3 दिन से मुरली नहीं पढ़ सकी थी। बाबा ड्रामा की नॉलेज को कितना महत्व देता है। ड्रामा की नॉलेज कितनी गहरी है। हरेक का पार्ट अपना-अपना है। एक का पार्ट न मिले दूसरे से, फिर चिंतन करने से फायदा क्या? फिर भी बाबा का परिवार है, सच्चा प्यार बाबा अभी साकार से अव्यक्त होकर भी दे रहा है। अभी मुझे खींच हुई मैं सारे परिवार को मिलके आ जाऊं, परिवार से मिलना माना बीजरूप हो जाना।

आज मुरली में बाबा ने कहा बीज़ में झाड़ समाया हुआ है, बीज़ से ही झाड़ निकलता है। अन्त में अगर बीज़ नहीं निकले तो फिर झाड़ कैसे निकलेगा! तो बीज़ झाड़ का ज्ञान है, ड्रामा का ज्ञान है? आखिर वह भी विज्ञान का ज्ञान है। कई हमारे लाडले, बाबा के ऐसे बच्चे हैं, नर्सेज, डॉक्टर्स को देख लगता था इनको भी कोई अच्छी तरह से रोज़ाना मैसेज भेजते रहें। जैसे सेवा का ध्यान रहता ऐसे स्व-स्थिति का भी ध्यान रहे, कोई भी परिस्थिति आये, स्थिति नीचे ऊपर न हो। हमारी स्वस्थिति इतनी ऊंची हो जो बस, रक्षक बाबा है रक्षा अपनी करनी है। एक बाबा ही शिक्षक भी है तो रक्षक भी है, कदम-कदम पर शिक्षा है, रक्षा भी करता है, परन्तु हम रक्षा अपनी तब करे जो कोई का अवगुण चित्त पर न धरे। तो मन शान्त, तन है शीतल ऐसी दुनिया बनानी है।

"हर एक ऐसा मिसाल बनो जिसे देख सभी आगे से आगे उन्नति को पाते रहें, बीती का चिन्तन नहीं करो"

साकार में बाबा ने एक बार सभी कारोबार करते हुए हम सब बहनों को सेवा पर भेज दिया। बहुत जिम्मेवारियाँ बाबा खुद ही सम्भालता था, तो मुझे आया कि मैं यहीं बाबा के साथ रह करके बाबा की कारोबार में कुछ मदद करुँ। परन्तु बाबा किसी को यहाँ नहीं रखता था, फिर भी मधुबन में जब भी बाबा के पास आते थे तो बाबा कमरे में (झोपड़ी में) बुला लेता था। फिर सारे समाचार का लेन-देन करके, सुन-सुनाके सारे मधुबन का चक्कर लगवाता था। तब यह हिस्ट्री हॉल बन रहा था। आज साकार को अव्यक्त हुए 46 वर्ष हुए। तो हमारी लाइफ में जो साकार बाबा की बातें याद हैं, वो अभी तक भी साथ दे रही हैं। मेरा एक स्वभाव था जो कुछ बाबा से सीखूँ वो सबको सुनाऊं, तो बाबा हमेशा प्यार से कहता था बच्ची जब पूणे से आती हो तो बॉम्बे वालों से भी मिलके आओ और जब मधुबन से जाती हो तो बॉम्बे होके मिलते, जो सुना सीखा वो सुनाके जाओ। बाबा को सच बोलना बहुत अच्छा लगता था। मैं सच के बिना रह नहीं सकती थी।

एक बारी बाबा के साथ कमरे में बाबा की गद्दी पर बैठी थी, बाबा प्यार से दृष्टि दे रहा था। वो दृष्टि कभी मुझे भूलती नहीं है क्योंकि बाबा ने एक बारी बड़ी सभा के बीच में कहा कि जब बाबा योग कराता है तो जैसे बाबा की आँखें खुली हैं वैसे तुम्हारी ऑखें भी खुली रहें। तब से यह सिस्टम बनाई क्योंकि पहले तो भक्ति का संस्कार था तो कई ऐसे आँखें बन्द करके बैठते थे। लेकिन कायदा यह कहता है कि योग करते कराते आँखें खुली रखनी है, तभी से दृष्टि का महत्व मालूम पड़ा। तो सामने जो भी दृष्टि देने बैठता था वो इतनी अच्छी दृष्टि देता था, सारी सभा अशरीरी बन जाए वो अनुभव अभी तक भी याद है।

आजकल मैं देखती हूँ, ड्रामा की नॉलेज बहुत-बहुत यूज़फुल है। बाबा ने हर मुरली में कहा है, हरेक का पार्ट अपना है। यह ऐसे क्यों करता, यह ऐसे क्यों करता... अभी इस तरह से नहीं कहना चाहिए क्योंकि इतना ज्ञान होते भी कोई कहे कि समझ में नहीं आता है कि मैं क्या करूँ, तो उसे क्या कहेंगे! ऐसी सिच्यूवेशन को समझ करके समा लेना होता है, बाकी यह भी नहीं कि सूक्ष्म संकल्प करते रहें या मूँझते रहें। नहीं। हरेक यह सोचे मुझे क्या करने का है? क्योंकि अन्त मते सो गति मेरी होगी। आपस में और बातों की भूँ भूँ करने के बजाए बाबा के ज्ञान की भूँ भूँ करो तो बहुत अच्छी-अच्छी बातें निकलेंगी तो फ्रेश हो जायेंगे।

अभी साकार के बाद 45-46 वर्षों में कितनी वृद्धि हुई है, कमाल है बाबा की और सेवा की। बाबा जो कहता है, उसे जो करता है उस पर विश्वास बैठ जाता है। उस पर फिर हक हो जाता है, यह भी कमाल है। अभी यह भी मैं अन्दर से समझती हूँ कि "सभी समान बन नहीं सकते हैं" परन्तु भावना बना सकती है। मैं और तो कुछ कर नहीं सकती हूँ इसलिए यह करती हूँ। सबके साथ सम्बन्ध अच्छा रखना शोभा है। रूखा सूखा नहीं होवे, टू मच हँसने वाला भी नहीं होवे। जैसे साकार में हम बच्चों की जिम्मेवारी बाबा पर थी, खर्चा बाबा सम्भालता था। अभी जो सारे ज्ञान का सार - चक्र, झाड़, सीढ़ी, त्रिलोक इसमें ज्ञान भरा पड़ा है। हमारी बुद्धि में यह सारा ज्ञान कितना याद है? कल्प पहले भी आप लोग ऐसे बैठे थे!

शरीर के अनुसार और समय के अनुसार भी सारी विश्व को सामने रख करके मैं कहती हूँ कि हर एक अभी प्रैक्टिकली ऐसा कोई न कोई मिसाल बनो, जिसको देख हरेक और आगे भी उन्नति को पाते रहें। जो बात बीती, कल क्या होगा, यह भी नहीं, यह नेचुरल होवे। दूसरा - जैसे साकार बाबा इतनी कारोबार होते हुए जो डायरेक्शन देता था, हम अजब खाती थी प्रैक्टिकल वो सहज हो जाता था। यज्ञ के वायुमण्डल में कोई प्रकार की भी कोई झरमुई झगमुई न हो। न कहाँ सुनें, न कहीं देखें।

मैं जब गुल्जार दादी के बाजू में बैठती हूँ तो स्नेह सकाश

की मदद मिलती है। यह अटैचमेंट नहीं है। नेचुरल है, हमारे संस्कार में वो आयेगी तो वायुमण्डल में फैलेगी। देह सहित देह के सम्बन्ध से ऑटोमेटिकली नष्टोमोहा और स्मृति स्वरूप में रहने का अभ्यास है, जिससे खुशी है। बाबा ने मुझे यह सर्टीफिकेट दिया है क्योंकि मेरा शुरू से ही यह अटेन्शन रहा है, न कोई मेरे नाम रूप में फंसे, न मैं किसी के नाम रूप में फंसू, जब से बाबा की बनी हूँ, बहुत अटेन्शन रखा है। कई हैं जो किसी न किसी के नाम रूप में फंसा हुआ महसूस करते हैं, मैं इस बात से बहुत ही अपने आपको सेफ समझती हूँ। ऐसे सेफ रखने से बाबा सम्भालता है इसलिए मुझे कभी यह ख्याल नहीं आता है कि कौन सम्भालेगा, भले इसको (हंसा बहन को) निमित्त बनाया है। दवाई आदि मैं क्या जानूं, यह ख्याल रखती है। परन्तु मैं स्मृति स्वरूप रहूँ, नष्टोमोहा स्थिति होवे, यह गीता ज्ञान के 18 अध्याय के अन्तिम स्थिति का गायन है। तो मैं यह क्यों कह रही हूँ? अभी सभी यह एम रखो कि इसका सार सभी को सुनाना है। और फिकर नहीं। कोई देश का, पैसे का... बाबा कभी ऐसे फिकर नहीं करता था। डायरेक्शन प्रमाण है तो कोई चिंता वा फिकर की बात नहीं रहती है। अच्छा, ओम् शान्ति।

तीसरा क्लास

"टाइम, मनी और एनर्जी बहुत-बहुत वैल्युबुल है, इसे ट्रस्टी बनकर यूज करो, कुछ भी व्यर्थ न जाये"

एक बार अव्यक्त बाबा ने कहा था समय अनुसार कैचिंग पॉवर और टचिंग पॉवर अच्छी होनी चाहिए, उससे लाभ बहुत होता है। वन्डरफुल बाबा के वन्डर्स देख सकते हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा है। मुरली से इतनी मोहब्बत है जो समझते हैं एक एक बाबा का शब्द एक्यूरेट है। हमारे जीवन में वो एक एक शब्द कभी मिस नहीं होना चाहिए। दूसरी बात आपस में सच्चाई, प्रेम और विश्वास हो, जरा भी चतुराई न हो। कारोबार में एकदम नम्बरवन ट्रस्टी होकर रहो। फिर विदेही होकर मेरी अन्त मते यही गति रहेगी। भावना है निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी ब्रह्मा बाप समान बन जायें, यह विश्वास है, भावना है।

आप लोग भले अपना काम-धन्धा करो पर उसमें सच्चाई हो। जिसके साथ हम काम करेंगे वो भी कहेंगे इसका जो पैसा आयेगा वह वेस्ट नहीं करें, ट्रस्टी होके यूज़ करें। सारे विश्व की सेवा ऐसे हुई है तब तो आज यज्ञ में बैठी हूँ। कहने का भाव न मेरे ऊपर बोझ हो, न मैं किसी पर बोझा हूँ, ऐसी ऐसी बातें जीवन में नोट करने से धारणा में आ जाती है, यह मैं अनुभव से कहती हूँ। ट्रस्टी और विदेही बनने से सब सहज हो जाता है। टाइम, मनी, एनर्जी कुछ भी वेस्ट न हो क्योंकि यह बहुत वैल्युबुल हैं इसलिए इसे ऐसे ही खर्च नहीं करना है।

इस बारी का मेरा बर्थ डे खूब धामधूम से मनाने जा रहे हैं, पर मैं कहती हूँ जीवन कैसे जीना है, उसका कुछ इस तरह से मनाओ, जीना है तो कैसे? मरना है तो कैसे? बाबा ने यह जो सिखाया है वह कभी भूलता नहीं है। दिल कहती है बाबा तुम्हें देखती रहूँ... बाबा भी मुझे देखता रहे तो बहुत मजा आता है।

आज मेरी कोई सेवायें करते हैं, मैं कहती हूँ कोई समय आयेगा, कोई यह सेवा भी नहीं लेंगी। मैंने भी साकार बाबा को कोई समय स्नान भी कराया होगा, खाना भी खिलाया होगा, यह सेवा नहीं पर भाग्य है। साकार बाबा को मैं देखती हूँ, बहुत सोल-कॉन्सेस होकर रहा, सदा ही बाबा का ऐसा चेहरा अच्छा लगता था। 24 ही घण्टा बाबा और मुरली का कोई न कोई शब्द वा चित्रों का ज्ञान बुद्धि में याद रखके चलते थे। प्रात: में जो मुरली सुनी वो एज़ इट इज लिखते थे, एक भी अक्षर मिस नहीं होता था, इतनी याद रहती थी। पहले बाबा हर मुरली की बहुत डीप डेफीनेशन सुनाता था। अभी आप सभी की बुद्धि में भी सारा ज्ञान सदैव रहे, कभी भूले नहीं। कई बातें अच्छी अच्छी दिमाग में दिल में रखने की ऐसी हैं जो दिल खुश, दिमाग ठण्डा रहता है।

दादी गुल्जार

"आत्मिक स्मृति सदा इमर्ज रहे, इस पर अण्डरलाइन कर अटेन्शन दो तो परिवर्तन दिखाई दे"

अभी हम सबको यही दृढ़ लक्ष्य रखना है कि सदा ही स्वमानधारी रहें। स्वमान याद भी रहता है, ऐसे नहीं भूल जाते हैं लेकिन एक होता है सिर्फ ध्यान में रहना - हम यह हैं। एक होता है जैसे कोई जज है घर में भी जायेगा तो उसको यह तो याद है ना मैं जज हूँ, लेकिन जब जज कुर्सी पर बैठता है तो वो नशा एक और होता है। तो इसी रीति से हम साधारण स्मृति में तो रहते हैं क्योंकि बाबा ने भी तीन शब्द बोला व्यर्थ, निगेटिव और साधारण संकल्प। तो साधारण रीति से तो हम सब ब्राह्मण पवित्र जीवन वाले हैं, यह तो याद रहती ही होगी लेकिन उस नशे में रहना वो तब होगा जब हमारी स्मृति की सीट ठीक होगी, यानि स्मृति सदा इमर्ज होगी। आत्मिक स्मृति में रहकर हर कर्म करें।

तो यह खास अण्डरलाइन करने की बात है कि अपने स्मृति को इमर्ज रूप में रखें। अभी हम लोगों को यह बीच-बीच में अण्डरलाइन करनी चाहिए कि स्मृति इमर्ज रूप में है? क्योंकि कारोबार तो चलानी पड़ती है, कारोबार में कारोबार की भी स्मृति थोड़ी मिक्स हो जाती है। कहाँ ज्यादा कहाँ कम होती है, तो वो मिक्स होने से वो नशा थोड़ा कम होता है। अगर हम सब मिल करके संकल्प लें कि बाबा जो कहता है, जो देखने चाहता है, वह हम करके दिखायेंगे तो समानता और सम्पन्नता सहज आ जायेगी और हम सबसे बाबा प्रत्यक्ष दिखाई देने लगेगा क्योंकि जब तक बच्चों की यह स्थिति अपने अन्दर प्रत्यक्ष नहीं है तो बाप कैसे प्रत्यक्ष होगा? तो बाबा ने हम लोगों को यह भट्ठी का जो चांस दिया है इससे अटेन्शन को और अण्डरलाइन लग जाती है। तो इस बारी हम कुछ ऐसा करें जो बाबा हमको सर्टीफिकेट देवे कि हाँ, परिवर्तन मैंने देखा। बाबा ने बच्चों से मिलन मनाने के लिए हाँ तो कर ली है, प्रोग्राम भी सबको मिल गया है लेकिन यह बाबा की बात याद रखनी चाहिए कि बाबा ने जो हमको संकल्प दिया कि मैं रिजल्ट देखना चाहता हूँ, सिर्फ फाइल में पत्र प्रतिज्ञा के नहीं एड करना चाहता हूँ। प्रत्यक्ष सम्पन्न और सम्पूर्ण मूर्ति देखना चाहता हूँ तो चलो हम फुल 100 नहीं लेकिन कुछ तो कदम बढ़ायें ना। जो बाबा कहे अच्छा चलो, 50 है, 60, 70 तक तो आवे, कुछ तो परिवर्तन बाबा देखे...।

तो मेरे ध्यान में इस भट्ठी में हम सभी जो भी बैठे हैं, वो अगर यह संकल्प करें और हम ब्राह्मणों के संकल्प में शक्ति तो है ही। अच्छे संकल्पों में अगर और एक्स्ट्रा दृढ़ता लायें तो क्या नहीं हो सकता है। लेकिन माया इसी में विघ्न डालने की कोशिश करती है। तो दृढ़ता को हम कमजोर नहीं करें, जैसे शुरू शुरू में संकल्प करते हैं तो कुछ समय तो हमको सफलता दिखाई देती है। फिर धीरे धीरे थोड़ा फ़र्क पड़ता है। कोई बात आ गई, कुछ भी हो जाता है...। तो दृढ़ता का संकल्प लेके कुछ-न-कुछ परिवर्तन अपने में जरुर करें। वास्तव में तो परिवर्तन का लक्ष्य तो ऊंचा ही होना चाहिए। लेकिन हम फिर भी परिवर्तन शुरू करेंगे तो हो ही जायेगा। और हमको ही बनना है और कौन आने हैं? और कोई पीछे ऐसे थोड़ेही आयेंगे जो राजा रानी बन जायेंगे। हम लोग ऐसे थोड़ेही बैठे हैं जो इतना समय चले हैं। हम ही बनेंगे। तो जब हमें बनना ही है तो यह अगर सोचें, तो मैं समझती हूँ हो सकता है।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

"बाहर की बातों से अन्तर्मुख बनो तब बाबा की आकर्षण में अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होगी"

जनवरी मास में सभी ने क्या अभ्यास किया? चारों तरफ सभी ने बहुत अच्छी योग की तपस्या की, इस तपस्या से ही विश्व को शान्ति का दान मिलता है लेकिन इसके लिए मन और मुख का मौन जरूरी है। सेकण्ड में इस देह की स्मृति से परे जाने का अभ्यास चाहिए। हम राजयोगियों को अपने इस योग का अनुभव है। हम यहाँ बैठे-बैठे उड़कर अपने

वतन में जाते हैं। बाबा के वतन में सन्देशियाँ उड़कर जाती हैं लेकिन वह तो ट्रान्स है, हम बुद्धि से अपने फरिश्तों की अव्यक्त दुनिया में बाबा से मिलन मनाने उड़कर जाते हैं। इस शरीर से अशरीरी न्यारे बन, उसी फरिश्तों की दुनिया में, लाइट की दुनिया में अव्यक्त बाबा के सामने मिलन मनाते हैं। तो इस जैसा अतीन्द्रिय सुख कोई नहीं है। यह दिल के अनुभव का गीत वही गा सकते जो इसकी प्रैक्टिस करते और बरोबर उस परम आनन्द का अनुभव करते हैं। कहते हैं गोपियों को अतीन्द्रिय सुख था, यह प्रैक्टिकल में हम राजयोगियों के सुख का ही गायन है। जितना इस देह से न्यारे बन आत्मा निश्चय कर और फिर बाबा से मिलन मनाते तो इस मिलन से बाबा सर्व शक्तियाँ भर देता है, जिसको ही तपस्या कहा जाता है। यही राजयोग है। इसका निरन्तर अभ्यास चाहिए, भट्ठी चाहिए।

हमने देखा है जिनको इस याद का, योग का अनुभव है, सहज ही दुनिया की सर्व बातों से उनकी बुद्धि हट जाती है और ऐसी प्रैक्टिस करने वालों की दृष्टि में शक्ति रहती है क्योंकि वृत्ति में एक बाबा ही रहता। स्वयं को बाबा के साथ कम्बाइन्ड देखते। जब तक इस योग की अनुभूति गहरी नहीं करेंगे तब तक शक्तियाँ नहीं मिलेंगी। जो भी पॉवर्स हैं वो इस योग साधना से मिलती हैं। इस साधना से माया पर विजयी बन सकते हैं। ज्ञान हमारी पढ़ाई है, जिस पढ़ाई को बुद्धि में धारण करना है। और जितनी ज्ञान की गहरी प्वाईन्ट्स बुद्धि में धारण होंगी उतना ही बुद्धि फिर दिल से बाबा की शुक्रिया का गीत गायेगी। और जितना याद की यात्रा करेंगे उतना अपने को वरदानों से भरपूर अनुभव करेंगे क्योंकि यह याद ही हमें वरदाता बाप से वरदान दिलाती, इसी से समीप हो जाते हैं। फिर दिल से गीत निकलता बाबा आपको पाकर हमने तो जहाँन पा लिया। ऐसी लगन वाले ही सच्चे आशिक बन माशुक की याद में रहते हैं।

हर एक हर घण्टे पाँच मिनट भी साइलेन्स की अनुभूति करो तो अनेक बातों पर विजय पाने की शक्ति आयेगी, जो बाबा कहते माया पर विजय पहनो, वह विजय तब होगी जब ज्ञान सहित योग में रहो। फिर माया नहीं आयेगी, बुद्धि यहाँ वहाँ नहीं जायेगी। मुरली ज्ञान में पक्का कराती परन्तु सवेरे का योग अशरीरी बनने में बहुत बड़ा बल देता है इसलिए योग में सचमुच यह अनुभव हो जैसे हम इस देह से उड़कर अपने अव्यक्त वतन में बाबा के पास पहुँच गये हैं।

निराकारी दुनिया तो परमधाम है लेकिन अव्यक्त वतन, सूक्ष्म वतन यह हमारे संगम की विशेषता है। उसका हमें हरेक को अनुभव चाहिए, जहाँ से बाबा हमें मिलने आते हैं। तो इसके लिए जितनी-जितनी बुद्धि शुद्ध बनेंगी, बाहर की बातों से अन्तर्मुख होगी, उतना ही बाबा की आकर्षण रहेगी। सचमुच हमें भगवान की आकर्षण हो रही है – यह अनुभव चाहिए। जैसे कई बार बाबा कहते कि बांधेलियों को बाबा से मिलने की आकर्षण होती कि कहाँ छुट्टी मिले तो हम बाबा से, भगवान से मिलने के लिए भागूँ। जैसे दु:ख में सिमरण सब करें वैसे बांधेलियों पर बन्धन है तो वह जास्ती याद करती हैं, आप लोग छुटेले हैं तो मस्त रहते हैं। अच्छा है मौज है, मस्त रहते, यह भले अच्छा है लेकिन लगन एक अलग चीज़ है। वह ऐसी लगन होती जो रात को नींद भी उड़ जाती और मन कहता बाबा के पास जाके बाबा से रूहरिहान करते रहें। कैसे बाबा लाइट के वतन में हमें लाइट रूप में ले जाता। खुद भी लाइट रूप बन जाओ तो बाबा लाइट रूप बन आप लोगों से मिलन मनावे। यही है रूहानियत की यात्रा। तो सभी को ऐसी रूहानी यात्रा की रूचि रख बाबा से मिलन की अनुभूति करते रहना है।

कईयों में इसकी रुची होती, कईयों में नहीं होती। रुची है तो सुख होगा, अगर इसकी रुची कम है तो बाबा के मिलन का सुख अनुभव नहीं होगा। जैसे सेवाओं में रुचि रखते तो सेवा के साथ-साथ मेवा भी खाते रहते। इससे कितनी आत्माओं का कल्याण होता - यह अनुभव करते रहते हो। दूसरों को कोर्स कराना माना खुद करना।

सदा बाबा की छत्रछाया के नीचे रहो तो रक्षक बाबा सदा रक्षा करता रहेगा। बाबा कहता बच्चे, तुम मेरी नज़रों में छिप जाओ। बाबा की मुरली में है वो मेरे मीठे-मीठे नूरे रत्नों, यह किसने बोला? नूर माना आंखें। तो हम बाबा के नयनों के नूर हैं। इससे बड़ा भाग्य और क्या चाहिए। है कोई दुनिया में जो कहे कि हम भगवान के नयनों के नूर हैं। हमें भगवान कहता तुम मेरे नयनों के तारे हो। बाबा ने अपनी नज़रों में हमें छिपा दिया है। बाकी तो दुनिया के खेल हैं, चाहे बीमारी है, आना है - जाना है, सर्विस करो उसमें आंधी भी आती, तूफान भी आते - यह वह सब होता परन्तु अपनी स्थिति स्थिर चाहिए।

सबसे पहले अपनी हर प्रकार से स्थिर स्थिति चाहिए। कोई कितना भी मन खराब करे, संग में कभी नहीं आना। सबसे बड़ा दुश्मन है - संग। संगदोष बुद्धि को बदल देता है। सबसे प्यार करो सब फ्रैन्ड्स हैं, पर्सनल फ्रैन्ड किसको नहीं बनाओ। यह एक अण्डरलाइन करो।

आपस में चाहे तीन हो या पाँच हो लेकिन रहना चाहिए सभी को मिलकर। रात को सोने से पहले दस मिनट भी आपस में मिलकर, ओम् शान्ति करके रूहरिहान करके फिर सो जाओ। कहने का भाव है कि आप लोग मन से भी खुश रहो, तन से भी खुश रहो। तुम भी खुश रहो तेरे से भी सब खुश रहें। हर स्थान पर खुशनसीबी का वातावरण हो। आने वाले समझें, यहाँ हम आये तो कितना खुश होके गये। किसके भी चेहरे से उदासी, घृणा, नफ़रत यह फील नहीं हो तब तो मजा है। फिर भी अगर कोई 19-20 बात हो तो आप लोग अपनी तपस्या से उसको मिटाओ। हमारी रूहानी आकर्षण भी एक तपस्या है जो सबको सकाश देगी। अच्छा - ओम् शान्ति।

वर्कशाप
विषय: रहम की खान बनो

- जो रहमदिल होते हैं वह सच्चे दिल वाले होते हैं, सच्ची दिल से रहम करते हैं। मास्टर रहमदिल बन दु:खी, अशान्त और भटकती हुई आत्माओं को सुख-शान्ति देंगे। रहमदिल वाले सच्ची दिल से सेवा करेंगे।
- रहम के बिना जीवन नहीं है, रहम स्वरूप बन गिरे हुए को उठाना, गले लगाना, फूल डालना, गुणों की माला पहनाना - यह रहम-भाव की निशानी है।
- गलती कोई बार-बार कर रहा है, उसके प्रति रहम की भावना प्रगट होगी।
- ग्लानी करने वाले, निंदा करने वाले के प्रति भी बेहद की रहम भावना होगी।
- कमजोर और निर्बल आत्माओं को मास्टर ज्ञान सूर्य बन सकाश देगा।
- रहमदिल - रहम की खान अर्थात् दाता - वह लेवता नहीं देवता स्वरूप होंगे।
- बेहद की भावना और इष्ट देव स्वरूप की स्मृति से रहमदिल होगा।
- पेशन्ट के प्रति पेशेन्स स्वरूप होकर रहम करेंगे।
- सबके साथ रहते हुए बेदाग हीरे जैसा, किसी के स्वभाव संस्कार की इफेक्ट उसके प्रति नहीं होगी।
- रहम की खान - लाइट हाउस एण्ड माईट हाउस।

बापदादा के महावाक्य :

आत्मिक प्यार की निशानी है - दूसरे की कमी को अपनी शुभभावना, शुभकामना से परिवर्तन करना। वर्तमान समय अपना स्वरूप मर्सीफुल बनाओ। लास्ट जन्म में भी आपके जड़ चित्र मर्सीफुल बन भक्तों पर रहम कर रहे हैं। रहम की खान बन जाओ। जब चित्र इतने मर्सीफुल हैं, तो चैतन्य में क्या होगा? चैतन्य तो रहम की खान है। रहम की खान बन जाओ। जो भी आवे रहम, यही प्यार की निशानी है।

रहम की खान की धारणायें -

- रहमदिल आत्मा मेरा बाबा, मेरा परिवार समझ, सबके ऊपर रहम करेंगे।
- मास्टर दाता बन अपकारियों पर उपकार करेंगे। सदा देते रहेंगे।
- दूसरों की कमी कमजोरियों को अपनी कमी-कमजोरी समझ माफ करेंगे।
- रहमदिल आत्मा की चलन और चेहरे से रायॅल्टी और रीयल्टी दिखाई देगी।
- हर निगेटिव को रहमदिल बनकर पाज़िटिव में परिवर्तन करेंगे।
- नि:स्वार्थ सेवा भाव और सर्व के प्रति सम्मान की दृष्टि होगी।
- माँ की तरह रहम की भावना होगी।
- समाने की शक्ति होगी, सर्व के प्रति कल्याण की भावना होगी।